12 काबुलीवाला

सौदा	पिटारी	अचानक	अधिकार	विश्वास
स्पष्ट	पोशाक	अपराध	कालिख	मेहरबानी

मेरी पाँच बरस की छोटी लड़की मिनी से घड़ीभर भी बोले नहीं रहा जाता। एक दिन वह सवेरे–सवेरे ही बोली, "देखो बाबूजी, भोला कहता है, आकाश में हाथी सूँड से पानी फेंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बाबूजी, भोला झूठ बोलता है, है ना?" और फिर खेल में लग गई।

मेरा घर सड़क के किनारे है। एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी। अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ कर गई और बड़ें ज़ोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!!"

कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अँगूर की पिटारी लिए, लंबा काबुलीवाला धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी जान लेकर भीतर भाग गई। उसे डर लगा कि कहीं वह उसें पकड़ न ले जाए। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो–चार बच्चे मिल सकते हैं।

काबुलीवाले ने मुस्कराते हुए मुझे सलाम किया। मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा। फिर वह बोला, "बाबू साहब, "आपका' लड़की 'किदर' गया?"

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया। काबुलीवाले ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देने चाहे पर उसने कुछ न

लिया डरकर वह मेरे घुटनों से चिपक गई। काबुलीवाले से उसकी पहली जान–पहचान इस तरह हुई। कुछ दिन बाद, किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखा कि मिनी काबुलीवाले से खूब बाते कर रही है और काबुलीवाला मुस्कराता हुआ सुन रहा है। मिनी की झोली बादाम–किशमिश से भरी हुई थी। मैंने काबुलीवाले को अठन्नी देते हुए कहा, "इसे यह सब क्यों दे दिया? अब मत देना।" फिर मैं बाहर चला गया।

कुछ देर तक काबुलीवाला मिनी से बातें करता रहा। जाते समय वह अठन्नी मिनी की झोली में डालता गया। जब मैं घर लौटा तो देखा कि मिनी की माँ काबुलीवाले से अठन्नी लेने के कारण उस पर खूब गुस्सा हो रही थी। काबुलीवाला प्रतिदिन आता रहा। उसने किशमिश–बादाम दे–देकर मिनी के छोटे से हृदय पर अधिकार जमा लिया। दोनों में खूब बातें होती और वे खूब हँसते। रहमत काबुलीवाले को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई पूछती, "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले! तुम्हारी झोली में क्या है?"

रहमत हँसता हुआ कहता, "हाथी"। फिर वह मिनी से कहता, "ओए तुम ससुराल कब जाएगा?"

इस पर उल्टे वह रहमत से पूछती, "तुम ससुराल कब जाओगे?"

रहमत अपना मोटा घूँसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।" इस पर मिनी खूब हँसती।

हर साल सर्दियों में काबुलीवाला अपने देश चला जाता। जाने से पहले वह सब लोगों से पैसा वसूल करने में लगा रहता। उसे घर–घर घूमना पड़ता, मगर फिर भी प्रतिदिन वह मिनी से एक बार मिल जाता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा कुछ काम कर रहा था। ठीक उसी समय सड़क पर बड़े जोर का शोर सुनाई दिया। देखा तो रहमत को सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। रहमत के कुरते पर खून के दाग हैं और सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा।

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपए उस पर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने इनकार कर दिया था। बस, इसी पर दोनों में बात बढ़ गई, और काबुलीवाले ने उसे छुरा मार दिया।

इतने में "काबुलीवाले! काबुलीवाले!!" कहती हुई मिनी घर से निकल आई। रहमत का चेहरा क्षणभर के लिए खिल उठा। मिनी ने आते ही पूछा, "ससुराल कब जाओगे?" रहमत ने हँसकर कहा, उदर' ही तो जा रहा हूँ।"

रहमत को लगा कि मिनी उसके उत्तर से प्रसन्न नहीं हुई। तब उसने घूँसा दिखाकर कहा, "ससुर को मारता, पर क्या करेगा, हाथ बांदा, है।"

छुरा चलाने के अपराध में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।

काबुलीवाले का ख्याल धीरे–धीरे मेरे मन से बिल्कुल उतर गया और मिनी भी उसे भूल गई।

कई साल बीत गए। आज मेरी मिनी का विवाह है। लोग आ–जा रहे हैं। मैं अपने कमरे में बैठा खर्च का हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत सलाम करके एक ओर खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी और न चेहरे पर पहले जैसी खुशी। अंत में उसकी ओर ध्यान से देखकर पहचाना कि यह रहमत

है।

मैंने पूछा, "क्यों रहमत, कब आए?"

"कल शाम जेल से छूटा" उसने कहा।

मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में एक जरूरी काम है, मैं उसमें लगा हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।"

वह उदास होकर जाने लगा। पर दरवाजे के पास रुककर बोला, "ओए ज़रा बच्ची को 'नई' देख सकता?"

शायद उसे विश्वास था कि मिनी अब भी वैसी ही बच्ची है। वह अब भी पहले की तरह "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!!" चिल्लती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों की उस पुरानी हँसी और बातचीत में किसी तरह की रुकावट न होगी। मैंने कहा, "आज घर में बहुत काम है। आज उससे मिलना न हो सकेगा।"

वह कुछ उदास हो गया और सलाम करके दरवाज़े से बाहर निकाल गया। मैं सोच ही रहा था कि उसे वापस बुलाऊँ। इतने में वह स्वयं ही लौट आया और बोला, "यह थोड़ा सा मेवा बच्ची वासते लाया। उसको देगा ज़रा?"

मैंने उसे पैसे देने चाहे पर उसने कहा, "आपका बहुत मेहरबानी है, बाबू साहब। पैसा रहने दो।" फिर ज़रा ठहरकर बोला, "आपका जैसा मेरा भी बेटी है। मैं उसी को याद करके आपका बच्ची के लिए थोड़ा सा मेवा ले आता है। मैं 'इदर' सौदा बेचने नहीं आता।"

उसने अपने कुरते की जेब में हाथ डालकर कागज़ का एक टुकड़ा निकाला। देखा कि कागज़ पर छोटे से हाथ के नन्हें से पंजे की छाप हाथ में थोड़ी सी कालिख लगाकर कागज़ पर उसकी छाप ले ली गई है। अपनी बेटी की इस याद को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ते के गली–कूचों में सौदा बेचने आता है।

देखकर मेरी आँखें भर आई। सब कुछ भूलकर मैंने उसी समय मिनी को बाहर

बुलाया। विवाह की पूरी पोशाक और गहने पहने मिनी शरम से सिकुड़ी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुलीवाला पहले तो झेंप गया। उससे पहली जैसी बातचीत करते नहीं बनी। वह हँसता हुआ बोला, "ओए लल्ली, तुम सास के घर जाता है क्या?"

मिनी अब सास के अर्थ समझती थी। मारे शरम के उसका मुँह लाल हो उठा।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी साँस भरकर रहमत वहीं ज़मीन पर बैठ गयां उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ, कौन जाने? वह उसकी याद में खो गया।

मैंने कुछ रुपये निकालकर उसके हाथ में रख दिए और कहा, "रहमत, तुम अपनी बेटी के पास देश चले जाओ।"

—रवींद्रनाथ ठाकुर

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :—

क) काबुलीवाला कौन था? वह मिनी के घर क्यों आता था?

....

ख) मिनी के साथ काबुलीवाले की जान–पहचान कैसे हो गई?

....

ग) काबुलीवाले ने मिनी के हृदय पर कैसे अधिकर जमाया?

....

घ) काबुलीवाला सर्दियों में कहाँ चला जाता था?

....

च) मिनी को विवाह की पोशाक पहने देखकर रहमत क्यों उदास हो गया?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. क) पढ़े और बताएँ : "काबुलीवाला" कहानी का कौन सा भाग आपको सबसे अच्छा लगता है ? उसे पढ़ें और बताएँ कि आपको यह भाग क्यों अच्छा लगता है ?

....

....

....

ख) काबुलीवाले ने मिनी को अठन्नी क्यों वापस कर दी? सबसे अधिक सही कथन पर ✓ लगाएँ :

– वह और अधिक पैसे चाहता था। ( )

– उसने पैसों के लालच से मिनी को मेवा नहीं दिया था। ( )

– वह मिनी के माता–पिता को प्रसन्न करना चाहता था। ( )

उद्देश्यः– पाठ–बोध व प्रत्यास्मरण।

3. पढ़ें, समझें और लिखें :

काबुल	काबुली	नेपाल	....
चीन	....	हिंदुस्तान	....
जापान	....	पाकिस्तान	....
तिब्बत	....	ईरान	....

उद्देश्य – 'ई' प्रत्यय लगाकर संज्ञा शब्दों के विशेषण शब्द बनाना।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :

काबुलीवाले को बुलाओ।

मिनी जोर–जोर से हँस रही थी।

ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया।

"बुलाओ" शब्द से बुलाने का "हँस रही थी" से हँसने का और "बनवाया" से बनने का अर्थात् किसी काम का होना मालूम होता है। पाठ से ऐसे पाँच वाक्य चुनकर लिखें जिनसे कोई काम होने या करने का बोध होता हो।

क) ....

ख) ....

ग) ....

घ) ....

च) ....

डद्देश्यः–क्रिया–पद की पहचान।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :

क   ख

दिन–दिन	–	हर दिन	दिन–रात	–	दिन और रात
घर–घर	–	....	गली–कूचे	–	....
बच्चा–बच्चा–		....	बादाम–किशमिश	–	....
वन–वन	–	....	सुबह–शाम	–	....
जगह–जगह–		....	राजा–रानी	–	....

उद्देश्यः– पुनरुक्त शब्द–ज्ञान।
सामासिक शब्द–ज्ञान।

6. कोष्ठक में दिए मुहावरों की सहायता से दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थान भरें:

उदाहरण :– इस पर दोनों में बात बढ गई और काबुली वाले ने उसे छुरा मार दिया। (बात बढ़ जाना)

क. रहमत का चेहरा क्षण भर में ....। (खिल उठना)

ख. मेरी आखें .... जब मैंने रहमत को देखा। (भर आना)

ग. मिनी का मुँह मारे शर्म के ....। (लाल होना)

घ. रहमत बेटी की याद को .... विदेश जाता। (छाती से लगाना।

च. बेटी ससुराल जाएगी तो बाप ....। (गहरी साँस लेना)

उद्देश्य :– मुहावरों का सही प्रयोग।

7. किसने कहा और किससे कहा :–

	कथन	किसने कहा	किससे कहा
क)	"बाबूजी, भोला कहता है, आकाश	....	....

में हाथी सूँड से पानी फ़ैकता है,
इसी से वर्षा होती है।"

ख) "हम ससुर को मारेगा।" ....

ग) "आज हमारे घर में ज़रूरी काम है, ...
मैं उसमें लगा हूँ। आज तुम जाओ,
फिर आना।"

घ) "ओए लल्ली, सास के घर जाता है क्या?" ....

उद्देश्य :– पाठ का प्रत्यास्मरण।

8. नीचे दिए कोष्ठकों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें:

1. कंधे पर मेवों की .... लटकाए काबुलीवाला धीरे–धीरे जा रहा था। (टोकरी / झोली)
2. काबुलीवाले ने .... हुए मुझे सलाम किया। (मुस्कराते / घबराते)
3. हर साल .... में काबुलीवाला अपने देश चला जाता। (गर्मियों / सर्दियों)
4. छुरा चलाने के अपराध में रहमत को .... साल की सज़ा हो गई। (कई / एक)
5. मैं यहाँ सौदा .... नहीं आता। (खरीदने / बेचने)

उद्देश्य :– उपयुक्त शब्द–चयन से वाक्यपूर्ती

9. श्रतुलेख :

अचानक, सूँड, फ़ैकना बादाम,किशमिश, काबुलीवाला, अधिकार, अपराध, सिपाही, विश्वास, हृदय, चिल्लाना।

उद्देश्यः– शुद्ध श्रवण व लेखन का अभ्यास।

11. शब्दार्थ :–

सवेरे –सवेरे	–	प्रातःकाल के समय
जान लेकर भागना	–	बचाव के लिए भाग जाना
अठन्नी	–	आठ आने का सिक्का। यह आज के पचास पैसे के बराबर होता था।
अधिकार ज़माना	–	हथिया लेना, कब्जा करना
खून से सना	–	खून से लथपथ
आँखें भर आना	–	आँखों में आँसू आ जाना
शर्म से सिकुड़ना	–	बहुत शर्मिंदा होना
मुँह लाल हो जाना	–	बहुत गुस्से में होना, शर्माना
गहरी साँस लेना	–	उदास होना, दुख में आह भरना
एका–एक	–	अचानक
देश जाना	–	अपने घर जाना
स्पष्ट	–	साफ़, प्रकटरूप से
कालिख	–	सियाही, कालापन
अपराध	–	क़सूर

उद्देश्य :– शब्दार्थ–ज्ञान।